चुने हुए शेर

माधव कौशिक

सम्पादन

हरेराम समीप

माधव कौशिक

पिता का नाम : श्री पहलाद किशन कौशिक

जन्म-तिथि : 1 नवम्बर 1954

जन्म-स्थान : भिवानी (हरियाणा)

शैक्षिक योग्यता : 'आईनों के शहर में', 'किरण सुबह की', 'सपने खुली निगाहों के हाथ सलामत रहने दो', 'आसमान सपनों का', 'नई सदी का सन्नाटा', 'सूरज के उगने तक', 'अंगारों पर नंगे पाँव', 'खूबसूरत है आज भी दुनिया', 'सारे सपने बागी हैं', 'जला दो चिराग़ आंधी में', 'सपना सही सलामत दे'।

खंड-काव्य : 'सुनो राधिका' (पुरस्कृत), 'लौट आओ पार्थ' (पुरस्कृत), नवगीत, 'मौसम खुले विकल्पों का', 'शिखर संभावना के', 'जोखिम भरा समय है'।

कथा-संग्रह : 'ठीक उसी वक़्त' (पुरस्कृत) 'रोशनी वाली खिड़की', 'माधव कौशिक की प्रतिनिधि कहानियाँ'।

कविता-संग्रह : 'सबसे मुश्किल मोड़ पर', 'एक अदद सपने की खातिर', 'कैंडल मार्च'।

बाल-साहित्य : 'खिलौने मिट्टी के', 'आओ अंबर छू लें'।

अनुवाद : 'क्षितिज के उस पार' (जस्टिस सुरेन्द्र सिंह की अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद), 'आवाज़ के आकार' (डॉ. रमेश की पंजाबी पुस्तक का अनुवाद)।

सम्पादन : 'हरियाणा की प्रतिनिधि हिन्दी कविता', 'समकालीन हिन्दी ग़ज़ल-संग्रह आलोचना', 'नवगीत की विकास यात्रा', 'कसौटी पर शब्द'।

माधव कौशिक के साहित्य पर 10 विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोध-कार्य हुए है। कुछ पुस्तकों का पंजाबी, संस्कृत, उर्दू तथा उड़िया में भी अनुवाद हुआ है। उन्होंने जोहान्सबर्ग (दक्षिण अफ्रीका), शारजहा, आबू धाबी तथा मैक्सिकों में आयोजित अंतरराष्ट्रीय लेखक सम्मेलनों में भाग लिया है।

सम्प्रति : अध्यक्ष, राष्ट्रीय साहित्य आकदमी, नई दिल्ली। अध्यक्ष, चंडीगढ़ साहित्य अकादमी।

संपर्क : मकान नं. 3277, सेक्टर-15 डी, चंडीगढ़-160047

मो. : 09888535393 ईमेल : k.madhav9@gmail.com

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस
नई दिल्ली
फ़ोन : 99682-88050, 82879-88726

ISBN 978-81-970121-5-0

₹ 160.00

चुने हुए शेर

माधव कौशिक

चुने हुए शेर

माधव कौशिक

सम्पादन

हरेराम समीप

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

I.S.B.N # 978-81-970121-5-0
4637/20, शॉप नं.–एफ–5, प्रथम तल, हरि सदन,
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
मो.: 9968288050, 9911866239
ई–मेलः littlebirdinfo21@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2024
© माधव कौशिक

आवरण चित्र : ककसाड़ टीम
मुद्रक : श्री बालाजी प्रिंटर्स, दिल्ली

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखक/प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

समर्पण

परम श्रद्धेय
डॉ. चन्द्र त्रिखा जी
के लिए...

मनुष्य और मनुष्यता के प्रति चिंतित ग़ज़लकार : माधव कौशिक

–हरेराम समीप

हिन्दी कवि दुष्यंत कुमार के बाद साहित्य और समाज को जिन ग़ज़लकारों ने सबसे अधिक प्रभावित किया है, उनमें श्री माधव कौशिक का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। यद्यपि उनकी कविता, गीत, ग़ज़ल, कहानी, नाटक, आलोचना तथा बाल साहित्य की अब तक लगभग पैंतालीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, लेकिन ग़ज़ल विधा के प्रति उनके लगाव और समर्पण के कारण उनकी पहचान एक ग़ज़लकार की बनी है। सही अर्थों में भी वे एक ग़ज़लजीवी हैं। अब तक छपे उनके पन्द्रह ग़ज़ल संग्रहों के प्रकाशन-क्रम में अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि किताब-दर-किताब उनकी ग़ज़लें निरंतर बेहतर हुई हैं, और अधिक निखरी हैं, इनमें कहीं ठहराव नहीं, कोई पुनरावृत्ति नहीं, किसी तरह का झोल नहीं। उनकी इसी ग़ज़लगोई को समझने के ध्येय से ग़ज़ल के पाठकों हेतु उनके सभी ग़ज़ल संग्रहों से 500 उत्कृष्ट शेरों को चुन कर यह संकलन तैयार किया गया है।

इन शेरों से गुजरते हुए सबसे पहले हमें माधव कौशिक का अपने समय, समाज, संस्कृति से गहरे लगाव का पता लगता है। जीवन की विविध हलचलों पर जो उनकी सूक्ष्म नज़र बनी हुई है, जिससे उनका बहुआयामी जीवनबोध, सामाजिक बोध और युगबोध प्रभावी ढंग से सामने आया है। वे स्वयं कहते हैं, "इन ग़ज़लों में आज की युग की विसंगतियों के साथ-साथ राजनीतिक ढोंग, सामाजिक असंतोष, आतंकवाद, उपभोक्तावादी अप-संस्कृति के दुष्परिणाम, मानव मूल्यों के ह्रास तथा पतनोन्मुख समाज से जुड़ी तमाम कड़वी-कसैली स्थितियों का अंकन हुआ है।"

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि माधव की ग़ज़ल के शेरों को समझने के लिए किसी को किसी व्याख्या या विवेचना की ज्यादा ज़रूरत नहीं पड़ती। ये शेर इतने सहज, सुग्राह और संप्रेषणीय हैं, कि वे सीधे-सीधे दिल में उतर जाते